International Journal for Multidisciplinary Research (IJFMR)
E-ISSN: 2582-2160 ● Website: www.ijfmr.com ● Email: editor@ijfmr.com

कक्षा ग्यारहवीं के विद्यार्थियों की संवेगात्मक परिपक्वता का अधिगम शैली पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन

हेमचंद यादव[1], डॉ सुरेखा विनोद पाटिल[2], डॉ छाया सोनपिपरे[3]

[1]शोधार्थी – डिलेश्वरी, विश्वविद्यालय दुर्ग छ.ग.

[2]निर्देशक, भिलाई मैत्री कॉलेज, छ.ग.

[3]सह - निर्देशक कल्याण पोस्ट ग्रेजुएट कॉलेज, भिलाई, छ.ग.

सारांश

वर्तमान समय में शिक्षा केवल विद्यार्थियों के बौद्धिक विकास तक सीमित नहीं है, अपितु विद्यार्थियों के संवेगात्मक विकास को भी अत्यंत महत्वपूर्ण माना जाने लगा है।संवेगात्मक परिपक्वता व्यक्ति के सवेग को समझने, नियंत्रित करने एवं सामाजिक परिस्थितियों के अनुकूल व्यवहार करने की क्षमता को दर्शाती है। इस शोध अध्यन का उद्देश्य कक्षा ग्यारहवीं में अध्यनरत विद्यार्थियों की संवेगात्मक परिपक्वता का उनकी सीखने की शैली पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन करना है। इस अध्ययन हेतु यादृच्छिक चयन के द्वारा कुल 50 विद्यार्थियों को लिया गया है l

जिनमें छात्र एवं छात्राएं तथा शहरी एवं ग्रामीण पृष्ठभूमि के विद्यार्थी सम्मिलित थे। अध्ययन से यह निष्कर्ष प्राप्त हुआ कि, विद्यार्थियों की संवेगात्मक परिपक्वता पर उनके परिवेश का प्रभाव पड़ता हैl

कीवर्ड: संवेगात्मक परिपक्वता , सीखने की शैली , बौद्धिक विकास, आत्मनिर्देशित

प्रस्तावना

शिक्षा का उद्देश्य केवल ज्ञान प्रदान करना नहीं है, वरन विद्यार्थियों के संपूर्ण व्यक्तित्व का विकास करना है। आज के प्रतिस्पर्धात्मक एवं तनावपूर्ण वातावरण में विद्यार्थियों के लिए संवेगात्मक संतुलन बनाए रखना अत्यंत आवश्यक हो गया है। संवेगात्मक परिपक्वता विद्यार्थियों की सीखने की रुचि, एकाग्रता, समस्या समाधान की क्षमता एवं सामाजिक अंतःक्रिया को प्रभावित करती है। सीखने की शैली वह तरीका है जिसके माध्यम से विद्यार्थी ज्ञान अर्जित करते, समझते और उसे प्रयोग में लाते हैं। इस प्रकार संवेगात्मक परिपक्वता एवं सीखने की शैली के बीच संबंध का अध्ययन शैक्षिक दृष्टि से अत्यंत महत्वपूर्ण है।

अध्ययन के उद्देश्य

1. संवेगात्मक परिपक्वता एवं सीखने की शैली के बीच संबंध का विश्लेषण करना।
2. कक्षा ग्यारहवीं में अध्यनरत विद्यार्थियों की संवेगात्मक परिपक्वता के स्तर का अध्ययन करना।
3. विद्यार्थियों की सीखने की शैली का अध्ययन करना।

शोध परिकल्पनाएँ

1. संवेगात्मक परिपक्वता एवं सीखने की शैली के बीच कोई सार्थक अंतर पाया गया।
2. छात्र एवं छात्राओं की संवेगात्मक परिपक्वता में कोई सार्थक अंतर पाया गया।

न्यादर्श:

Table No. 01

S.no.			
1.	Boys	25	50
2.	Girls	25	

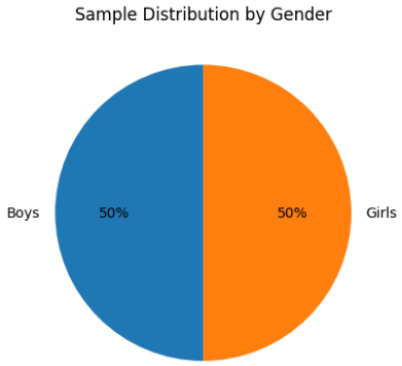

शोध विधि

इस अध्ययन हेतु सरल यादृच्छिक विधि का चयन किया गया।

शोध उपकरण

संवेगात्मक परिपक्वता मापनी तथा अधिगम शैली प्रश्नावली का उपयोग किया गया।

Group Statistics Table No.02

Locale	**N**	**Mean**	**SD**
Urban	25	**81.64**	4.95
Rural	25	**76.44**	5.12

Independent Samples t-Test Table no.03

t-value	df	Sig.(p)
2.81	48	0.007

तालिका 03 से स्पष्ट है कि शहरी विद्यार्थियों की अधिगम शैली (Mean = 81.64) ग्रामीण विद्यार्थियों अधिगम शैली (Mean = 76.44) की तुलना में अधिक प्रभावी पाई गई। प्राप्त t-value = 2.81 एवं p-value = 0.007, जो 0.05 स्तर से कम है। अतः शून्य परिकल्पना **अस्वीकृत** की जाती है।

निष्कर्ष:

अध्ययन से यह निष्कर्ष प्राप्त हुआ कि, कक्षा ग्यारहवीं में अध्यनरत विद्यार्थियों की संवेगात्मक परिपक्वता पर उनके परिवेश का प्रभाव पड़ता है जिससे शहरी एवं ग्रामीण विद्यार्थियों की सीखने की शैली में सार्थक अंतर पाया गया। अतः यह कहा जा सकता है कि संवेगात्मक परिपक्वता एवं सीखने की शैली दोनों ही व्यक्तिगत एवं सामाजिक कारकों से प्रभावित होते हैं। सिन्हा (2014) के शोध निष्कर्ष के अनुसार,विद्यार्थियों के सीखने पर परिवेश का प्रभाव पड़ता है

संदर्भित ग्रन्थ:

1. Goleman, D. (1995). *Emotional Intelligence*. New York: Bantam Books.
2. Best, J. W. & Kahn, J. V. (2011). *Research in Education*. Pearson.
3. Mangal, S. K. (2012). *Advanced Educational Psychology*. PHI Learning.
4. सिन्हा (2014). उच्चतर माध्यमिक विद्यालय के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि पर संवेगात्मक बुद्धि संवेगात्मक परिपक्वता एवं सामाजिक परिवेश का प्रभाव का अध्ययन, https://shodhganga.inflibnet.ac.in/handle/10603/395649